



॥ श्री रुक्मिणी माता की आरती ॥
॥ ॐ रुक्मिण्यै नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री रुक्मिणी माता की आरती ॥

ॐ जय रुक्मिणी माता, मैया जय रुक्मिणी माता।

श्रीकृष्ण-प्राणप्रिय तुम हो, हरो भवभय त्राता॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥

विदर्भपुरी में प्रकट हुई, लक्ष्मी रूप धरे।

भक्तों पर करुणा बरसाओ, दुःख-दारिद्र्य हरे॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥

कमल समान सुकोमल मुख, शोभा अति न्यारी।

पीताम्बर भूषण धारण, छवि मंगलकारी॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥

श्रीकृष्ण संग विराजो माता, द्वारकाधीश दुलारी।

प्रेम, भक्ति और धर्म की, तुम हो ज्योति हमारी॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥

सौभाग्य, सुख, धन और वैभव, सबको देने वाली।

भक्त जनों की मनोकामना, पल में करने वाली॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥

दीन-दुखी की लाज बचाओ, शरण तुम्हारी आई।

करुणा करके कृपा बरसाओ, भव से पार लगाई॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥

संतान, यश, आरोग्य प्रदानो, मंगलमय वरदाता।

सद्बुद्धि, शांति, प्रेम प्रदानो, जग की पालनकर्ता॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥

तुलसी, पुष्प, दीपक अर्पित, भाव सहित जो ध्यावे।

श्रीकृष्ण सहित कृपा तुम्हारी, जीवन सफल बनावे॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥

जो यह आरती नित गावे, श्रद्धा सहित पुकारे।

रुक्मिणी-कृष्ण कृपा से उसके, संकट सभी निवारे॥

ॐ जय रुक्मिणी माता॥